अमर चित्र कथा

सती और शिव

संख्या ५५० ₹९०

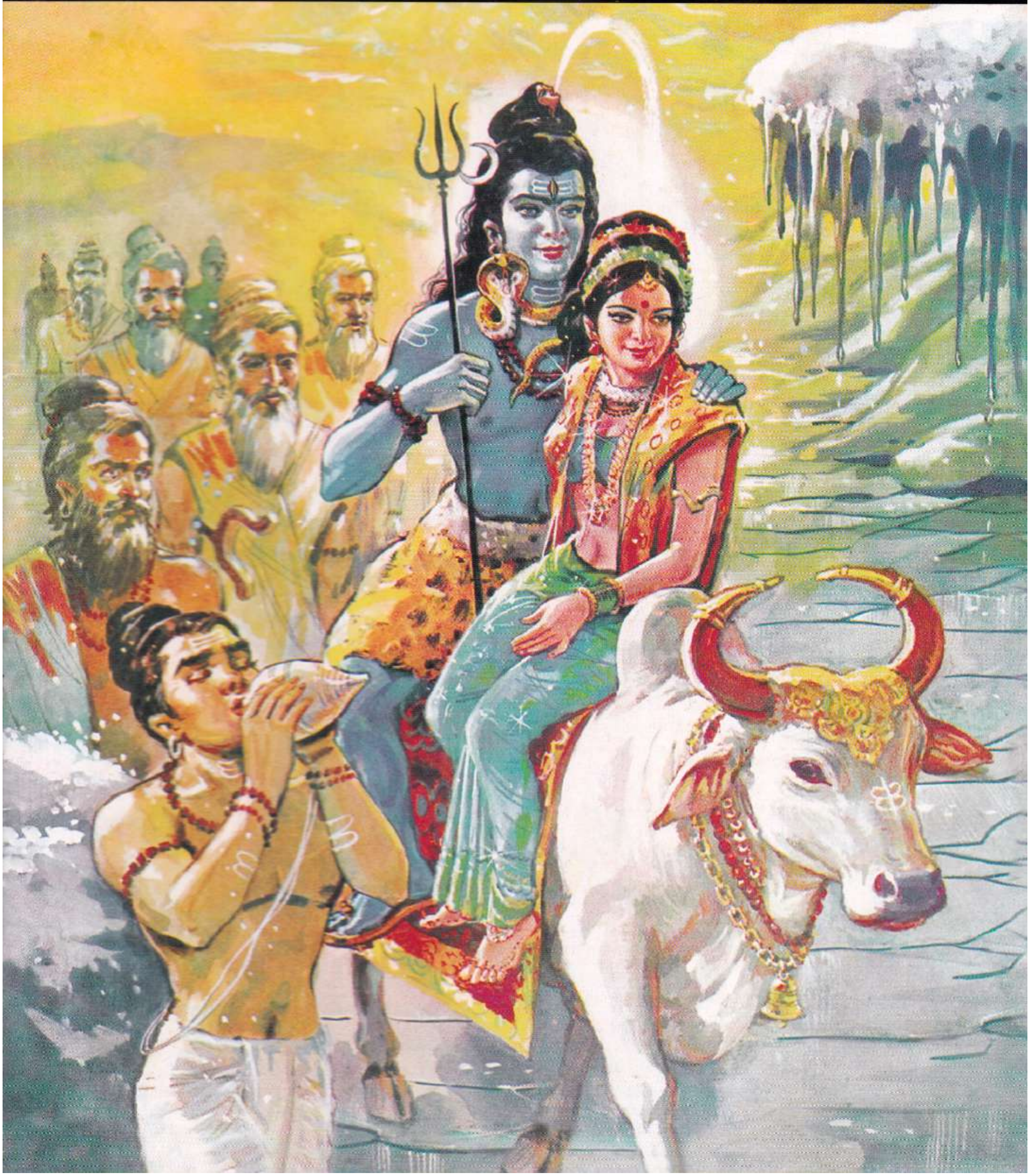

तलाश अपनी जड़ों की

जब वे मुड़ कर अपने बचपन के उन दिनों की ओर देखते हैं, जब उनके व्यक्तित्त्व का विकास हो रहा था, तब अनेक भारतीय बड़े स्नेह से अमर चित्र कथा की उन सचित्र पुस्तकों को याद करते हैं, जिन्होंने उनके जीवन में अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। यह एसीके – अमरचित्र कथा ही थीं जिन्होंने उन्हें अपनी भव्य विरासत की पहली झलक दिखलाई थी।

अमर चित्र कथा १९६७ में पेश की गयीं। इस समय चुनने के लिए अमर चित्र कथा की ४०० से ज़्यादा पुस्तकें उपलब्ध हैं। संसारभर में इनकी ९ करोड़ से ज़्यादा प्रतियां बिक चुकी हैं।

अब अमर चित्र कथा की पुस्तकें और भी बड़े पैमाने पर उपलब्ध हैं – भारतभर में १००० + पुस्तक विक्रेताओं के पास। अपने नज़दीकी विक्रेता का पता जानने के लिए यहां लॉग ऑन करें : www.ack-media.com. अगर किसी पुस्तक विक्रेता तक पहुंचना आसान न हो तो आप सभी पुस्तकें हमारे ऑनलाइन स्टोर www.amarchitrakatha.com से ख़रीद सकते हैं। हम संसारभर में हर जगह पुस्तकें बड़ी जल्दी पहुंचा देते हैं।

हमारे पुस्तकों के भंडार में से आपको अपनी मनपसंद पुस्तक चुनने में आसानी हो, इसके लिए हमने पुस्तकों को पांच वर्गों में विभाजित किया है।

महाकाव्य तथा धार्मिक कथाएं
महाकाव्यों एवं पुराणों की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ

भारतीय साहित्य
भारतीय साहित्य की मनमोहक कहानियाँ

लोक कथाएं तथा हास्य कथाएं
सदाबहार लोक कथाएं, दंत कथाएं तथा विवेक और हास्य से भरी कहानियाँ

शूरवीर
वीर पुरुषों तथा महिलाओं की मन छूने वाली कहानियाँ

दूरदृष्टा
विचारकों, समाज सुधारकों तथा राष्ट्र निर्माताओं की प्रेरक कहानियाँ

समकालीन साहित्य
भारतीय समकालीन साहित्य की उत्कृष्ठ कहानियाँ

कथा	चित्र	संपादक	मुखपृष्ठ
कमला चन्द्रकांत	पी.बी.कवाडी	अनंत पै	दयाल पाटकर

Amar Chitra Katha Pvt Ltd
© Amar Chitra Katha Pvt Ltd,1977, Reprinted January 2023,
ISBN 978-81-8482-325-7
Published by Amar Chitra Katha Pvt. Ltd., 204, 2nd Floor, Dhantak Plaza,
Makwana Road, Gamdevi, Marol, Andheri (East), Mumbai - 400059, India.
For Consumer Complaints Contact Tel : + 91-2249188881/2
Email: customerservice@ack-media.com
Printed in India

This book is sold subject to the condition that the publication may not be reproduced, stored in a retrieval system (including but not limited to computers, disks, external drives, electronic or digital devices, e-readers, websites), or transmitted in any form or by any means (including but not limited to cyclostyling, photocopying, docutech or other reprographic reproductions, mechanical, recording, electronic, digital versions) without the prior written permission of the publisher, nor be otherwise circulated in any form of binding or cover other than that in which it is published and without a similar condition being imposed on the subsequent purchaser.

सृष्टिकर्ता ब्रह्मा योगिराज शिव को विवाह बँधन में बाँधना चाहते थे। भगवान विष्णु ने उन्हें सलाह दी कि उमा से प्रार्थना की जाये कि वह पृथ्वी पर अवतार लेकर शिव की पत्नी बने।

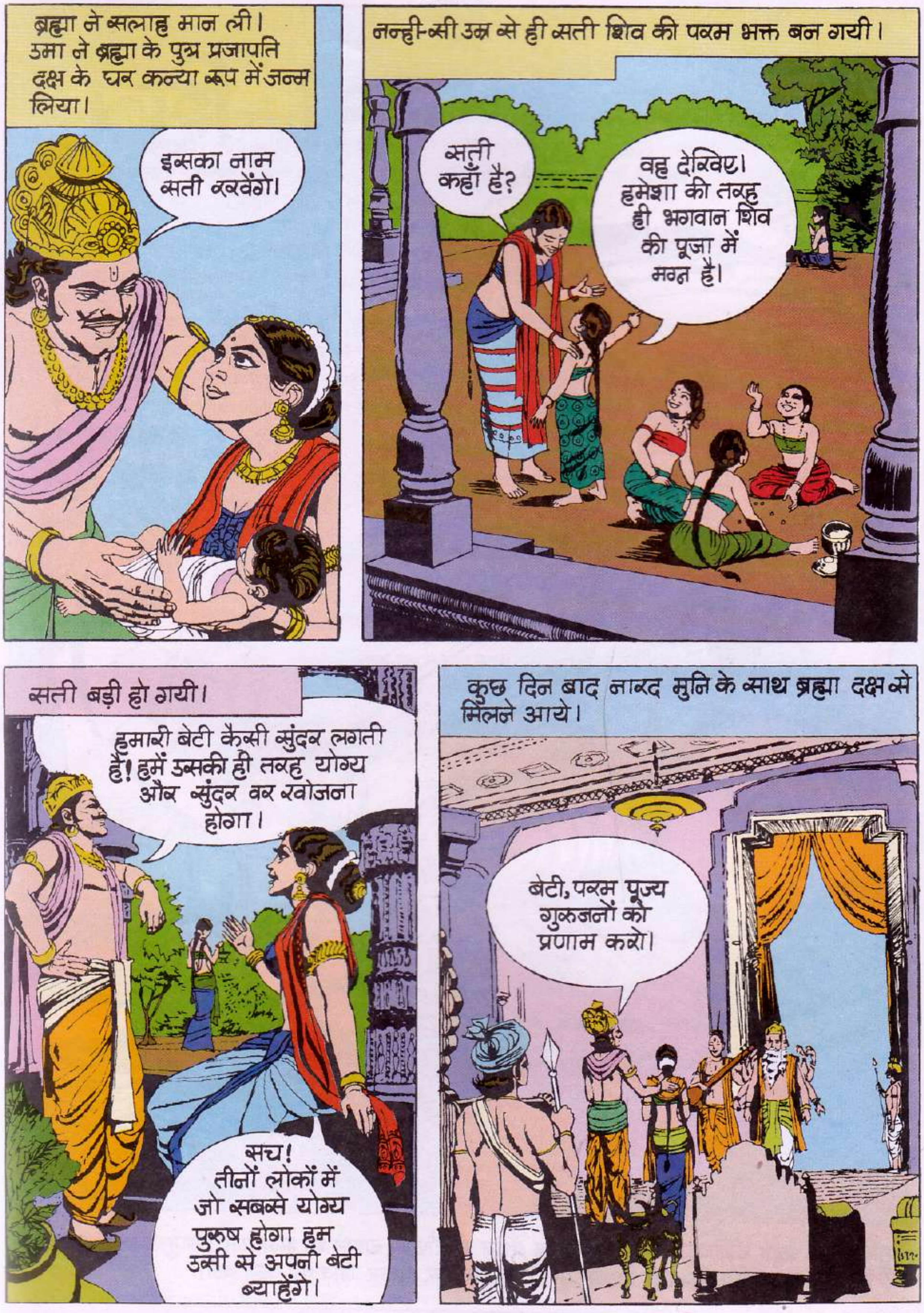
ब्रह्मा ने सलाह मान ली। उमा ने ब्रह्मा के पुत्र प्रजापति दक्ष के घर कन्या रूप में जन्म लिया।
इसका नाम सती रखेंगे।
नन्ही-सी उम्र से ही सती शिव की परम भक्त बन गयी।
सती कहाँ है?
वह देखिए। हमेशा की तरह ही भगवान शिव की पूजा में मग्न है।
सती बड़ी हो गयी।
हमारी बेटी कैसी सुंदर लगती है! हमें उसकी ही तरह योग्य और सुंदर वर खोजना होगा।
सच! तीनों लोकों में जो सबसे योग्य पुरुष होगा हम उसी से अपनी बेटी ब्याहेंगे।
कुछ दिन बाद नारद मुनि के साथ ब्रह्मा दक्ष से मिलने आये।
बेटी, परम पूज्य गुरुजनों को प्रणाम करो।

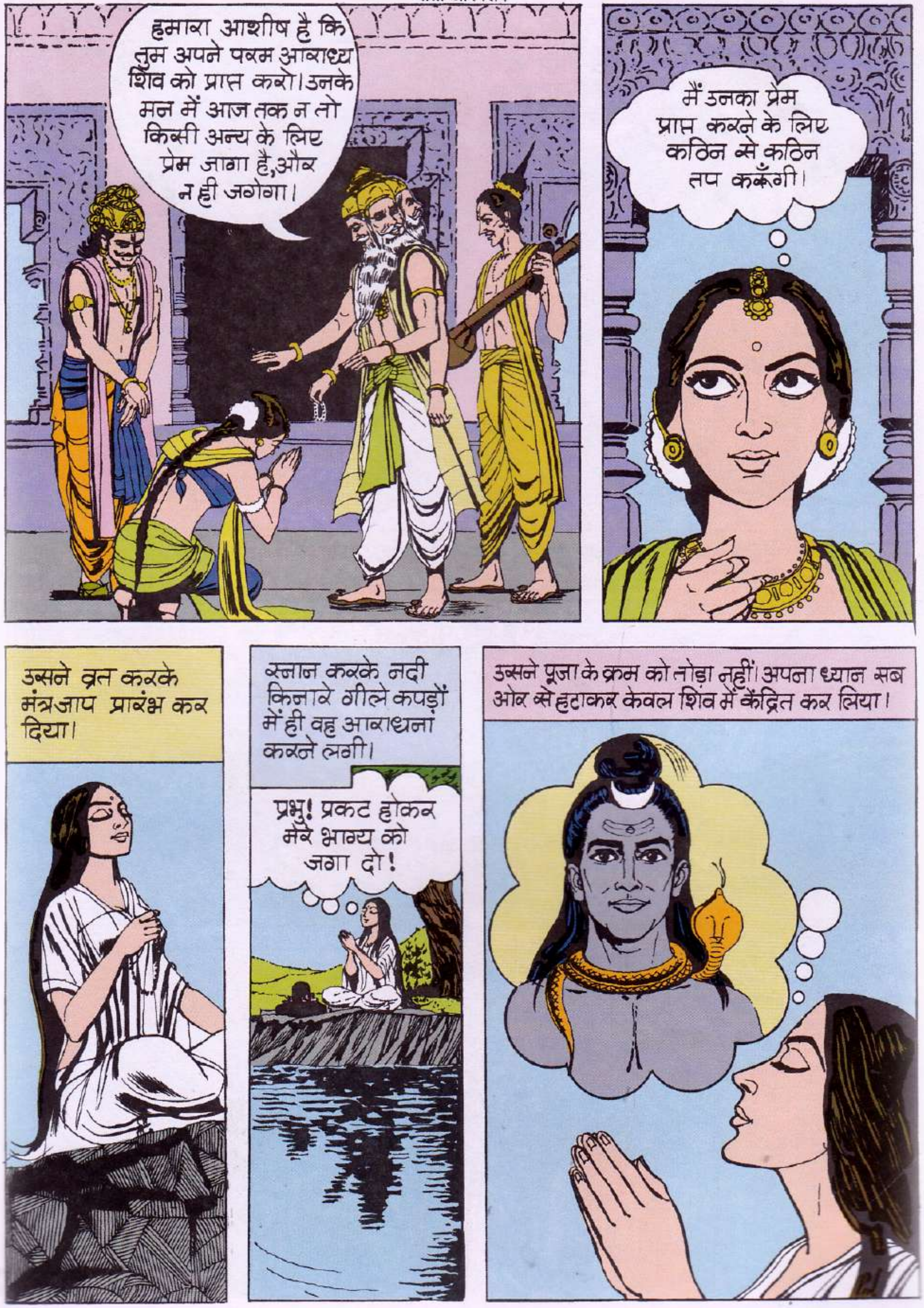
हमारा आशीष है कि तुम अपने परम आराध्य शिव को प्राप्त करो। उनके मन में आज तक न तो किसी अन्य के लिए प्रेम जागा है, और न ही जगेगा।
मैं उनका प्रेम प्राप्त करने के लिए कठिन से कठिन तप करूँगी।
उसने व्रत करके मंत्रजाप प्रारंभ कर दिया।
स्नान करके नदी किनारे गीले कपड़ों में ही वह आराधना करने लगी।
प्रभु! प्रकट होकर मेरे भाग्य को जगा दो!
उसने पूजा के क्रम को तोड़ा नहीं। अपना ध्यान सब ओर से हटाकर केवल शिव में केंद्रित कर लिया।

उधर स्वर्ग लोक में—
सती ने शिव-प्राप्ति के लिए तपस्या प्रारंभ कर दी है।
हमें चलकर उसे आशीर्वाद देना चाहिए।
अपनी संगिनी सरस्वती के साथ ब्रह्मा और लक्ष्मी के साथ विष्णु तथा अन्य ऋषि-मुनि सती के पास आये। किंतु—
वाह! यह तो अद्भुत एकनिष्ठा से ध्यान में डूबी है। इसे हमारा आना मालूम ही नहीं पड़ा। धन्य है!
आये थे आशीष देने, पर स्वयं ही आशीष माँगने लगे।

फिर वे सब शिव के पास गये।
शिव! जैसे मैंने सरस्वती को और विष्णु ने लक्ष्मी को सहचरी बनाया है, वैसे ही आप भी अपने लिए एक संगिनी चुन लीजिए।
शिव मुस्कराये। थोड़ी देर मौन रहने के बाद बोले—
मैं विवाह करने को तैयार हूँ। पर मैं तो एक योगी हूँ।
भला ऐसी स्त्री कहाँ मिलेगी जो तब तो योगिनी बन जाये जब मैं तप करूँ और भोगिनी बन जाये जब मैं प्रेम करूँ।

ब्रह्मा प्रसन्न हो गये।
शिव! मेरी पोती सती ऐसी ही कन्या है।
हाँ शिव! सचमुच उसमें यह गुण है।
कहाँ है वह?
इस समय वह तुम्हारा प्रेम प्राप्त करने के लिए कठिन तपस्या कर रही है। वह तो अटल प्रण किये बैठी है।
तब विष्णु ने भी आग्रह किया —
शिव! उसकी आकांक्षा पूरी कीजिए। उसे अपना लीजिए। वह सर्वथा योग्य है।
सबकी मनोकामना पूर्ण हुई। वे लौट गये।
मुझे सती के पास जाना चाहिए।

दक्ष पुत्री! हम तुम्हारी भक्ति से प्रसन्न हैं। जो चाहो वरदान माँगलो।
यद्यपि शिव जानते थे कि वह क्या वरदान चाहती हैं, फिर भी वे उनके मुख से सुनना चाहते थे।
कैसे बताऊँ कि आप ही हैं जिन्हें मैं वरदान के रूप में चाहती हूँ।
एक क्षण को सती हिचकिचायीं फिर बोलीं—
भगवन्! आप...

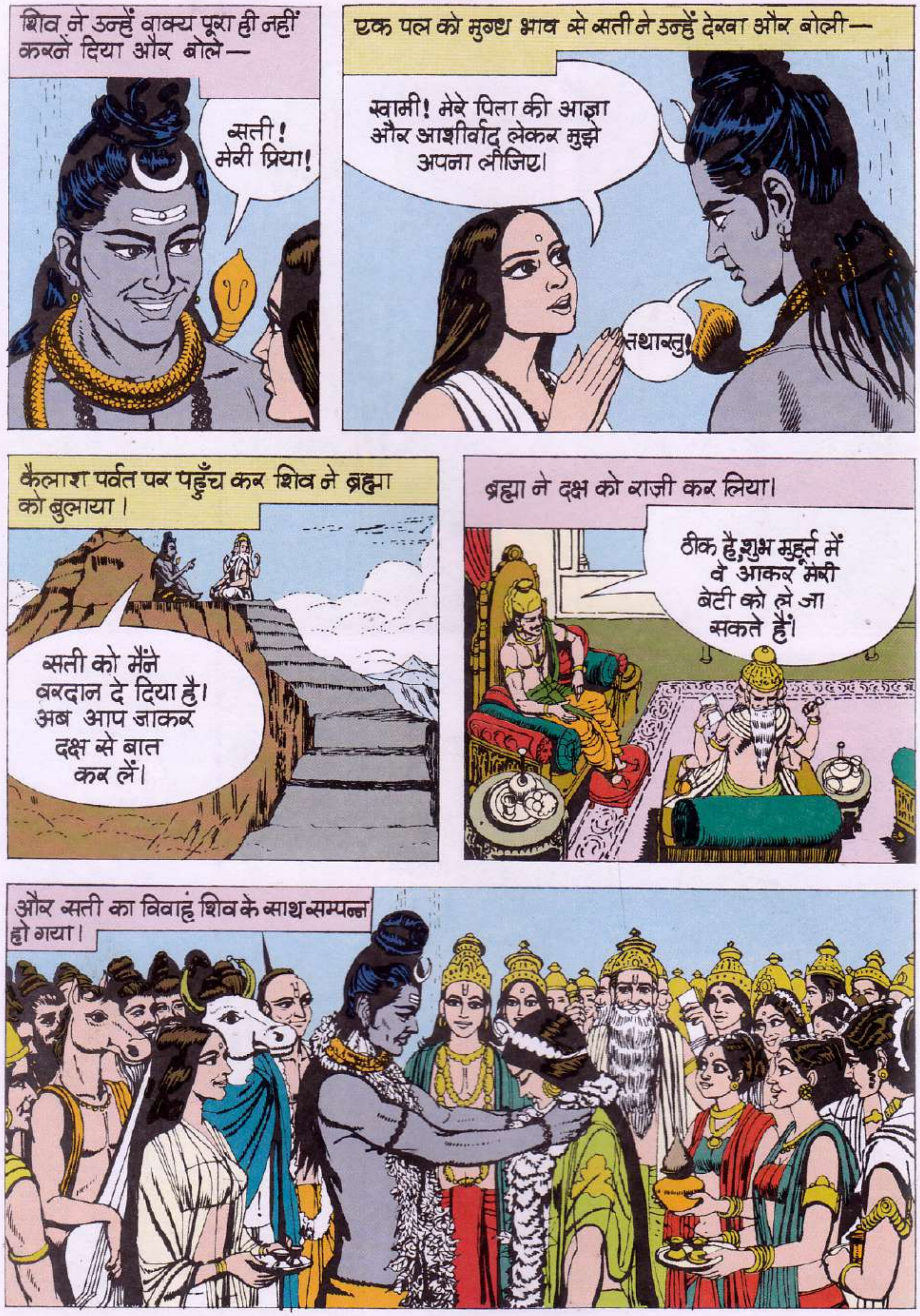
शिव ने उन्हें वाक्य पूरा ही नहीं करने दिया और बोले—
सती! मेरी प्रिया!
एक पल को मुग्ध भाव से सती ने उन्हें देखा और बोली—
स्वामी! मेरे पिता की आज्ञा और आशीर्वाद लेकर मुझे अपना लीजिए।
तथास्तु!
कैलाश पर्वत पर पहुँच कर शिव ने ब्रह्मा को बुलाया।
सती को मैंने वरदान दे दिया है। अब आप जाकर दक्ष से बात कर लें।
ब्रह्मा ने दक्ष को राज़ी कर लिया।
ठीक है, शुभ मुहूर्त में वे आकर मेरी बेटी को ले जा सकते हैं।
और सती का विवाह शिव के साथ सम्पन्न हो गया।

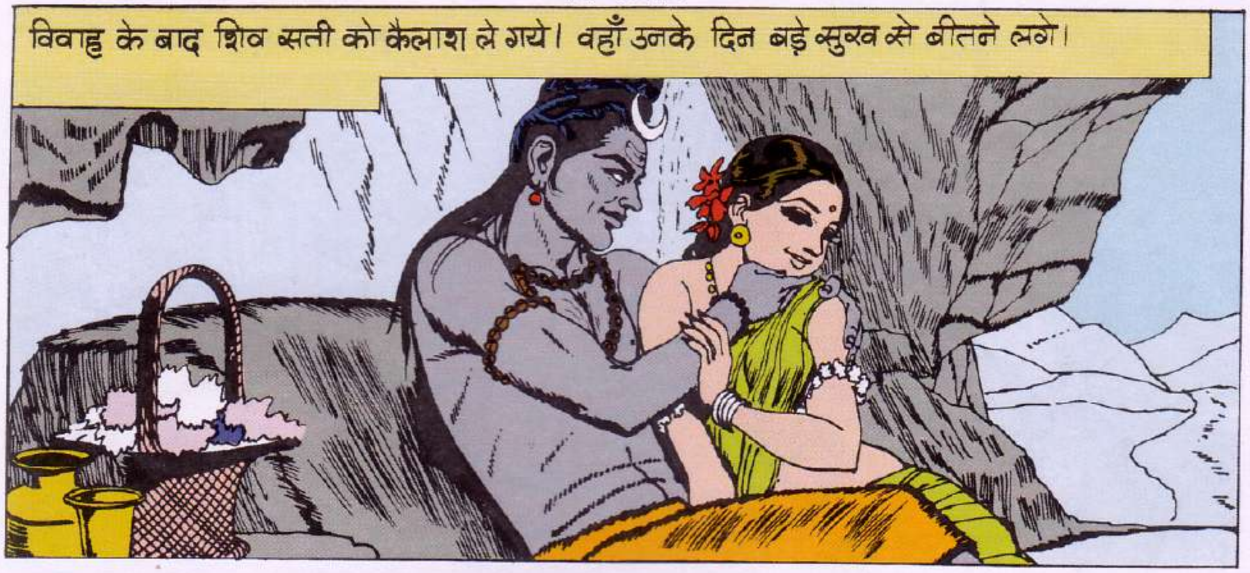
विवाह के बाद शिव सती को कैलाश ले गये। वहाँ उनके दिन बड़े सुख से बीतने लगे।

एक दिन—
प्रयाग में एक विशाल यज्ञ हो रहा है। स्वर्ग-लोक-वासियों के लिए भी निमंत्रण आया है। तुम चलोगी?
जरूर चलूँगी, स्वामी!

सती और शिव प्रयाग की ओर चल दिये।

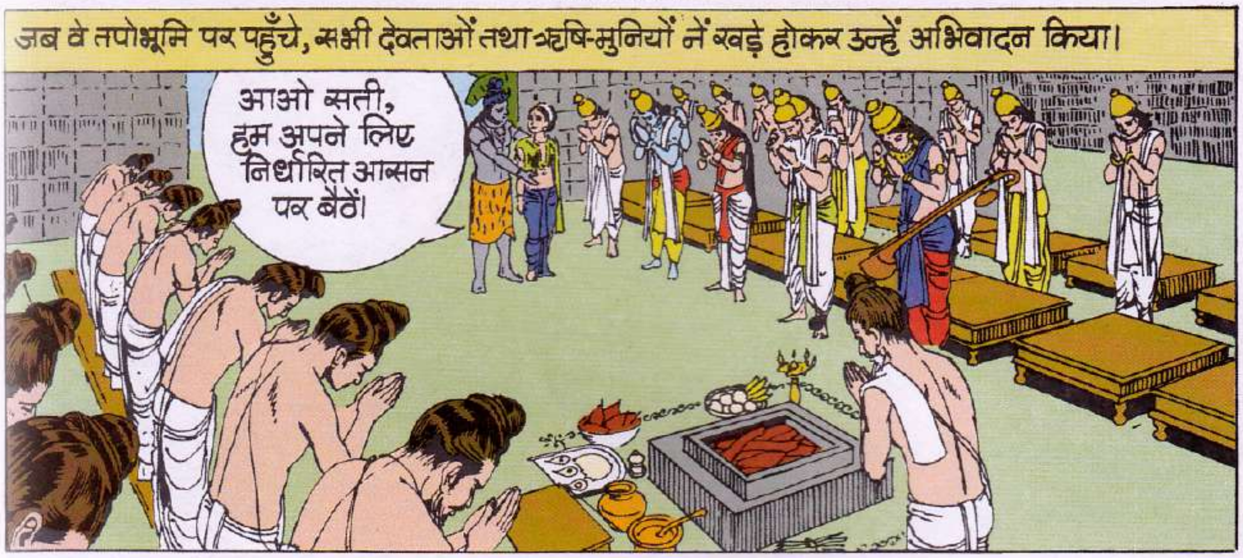
जब वे तपोभूमि पर पहुँचे, सभी देवताओं तथा ऋषि-मुनियों नें खड़े होकर उन्हें अभिवादन किया।
आओ सती, हम अपने लिए निर्धारित आसन पर बैठें।

जैसे ही वे दोनों बैठे, दक्ष ने प्रवेश किया।
अहा! सब लोग मुझे प्रमुख प्रजापति के रूप में स्वीकार करते हैं।

अच्छा! यह मेरा घमंडी दामाद बैठा ही है। मेरा अपमान करने की हिम्मत कर रहा है। इसे पाठ पढ़ाना ही होगा।
श्वसुर जी समझ ही नहीं रहे हैं। मैं उनसे श्रेष्ठ हूँ, मैं यदि उनके सामने झुकूँगा तो उन पर ही पाप पड़ेगा।

यज्ञ के बाद जब दक्ष अपने महल में वापस आया तो अपने अपमान की चोट से बहुत बेचैन था।
मैं एक अभूतपूर्व महायज्ञ का आयोजन करूँगा। ब्रह्मा और विष्णु को निमंत्रण भेजूँगा। तीनों लोकों के सभी प्राणियों को बुलाऊँगा। पर उस अकृतज्ञ बेटी को जिसने उसे चुना है और उस उजड्ड दामाद को नहीं बुलाऊँगा।

कुछ दिन बाद —
इतना सजधज कर सब लोग कहाँ जा रहे हैं?
पता लगाती हूँ।

जब उसे पता चला कि वे सब तो दक्ष के यहाँ महायज्ञ में जा रहे हैं तो—
अजीब बात है, मेरी स्वामिनी और उनके पति को ही नहीं बुलाया गया?
उसने सती को आकर बताया—
आपके पिता ने एक महायज्ञ का आयोजन किया है। वे सब वहीं जा रहे हैं।
पिता के घर?
सती को घोर आश्चर्य हुआ।
पिताजी हम लोगों को बुलाना कैसे भूल गये?
वे शिव के पास गयीं और यज्ञ की बात बतायी।
पिताजी की यज्ञ-शाला में हमें भी चलना चाहिए न!

शिव ने बड़े प्यार से उन्हें देखा।
हम नहीं जा सकते, प्रिये! दक्ष मुझे अपना शत्रु मानते हैं। जानबूझकर उन्होंने हमारी उपेक्षा की है।
लेकिन सती ज़िद करती रहीं।
यह सब ठीक है, फिर भी मैं जाना चाहती हूँ।
शिव जानते थे कि उनका जाना ठीक नहीं है फिर भी उन्होंने उनका मान रखा।
ठीक है, जाना चाहती ही हो तो जाओ पर मैं नहीं चलूँगा। नंदी तुम्हें राजसी ठाटबाट से ले जायेगा।

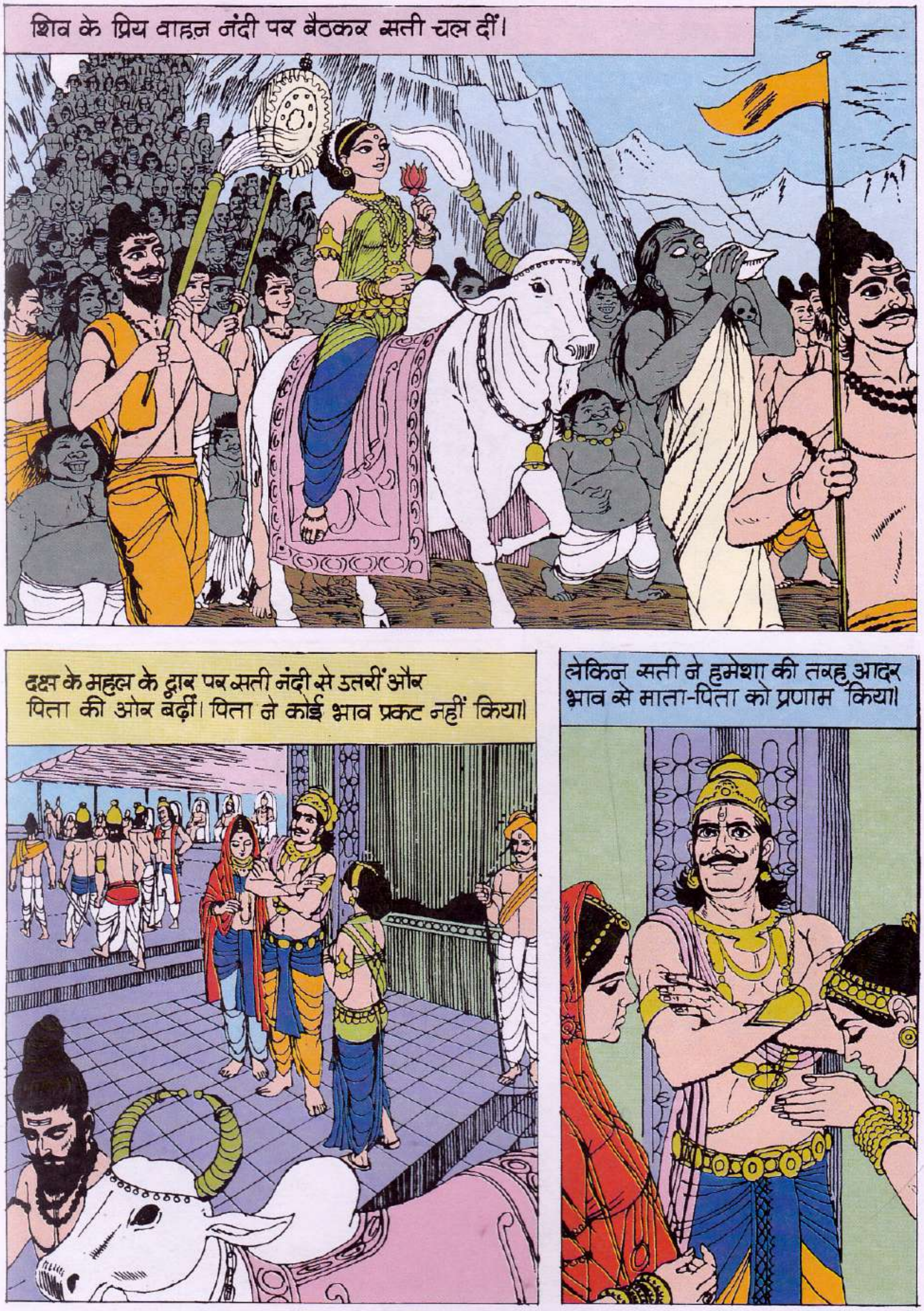
शिव के प्रिय वाहन नंदी पर बैठकर सती चल दीं।
दक्ष के महल के द्वार पर सती नंदी से उतरीं और पिता की ओर बढ़ीं। पिता ने कोई भाव प्रकट नहीं किया।
लेकिन सती ने हमेशा की तरह आदर भाव से माता-पिता को प्रणाम किया।

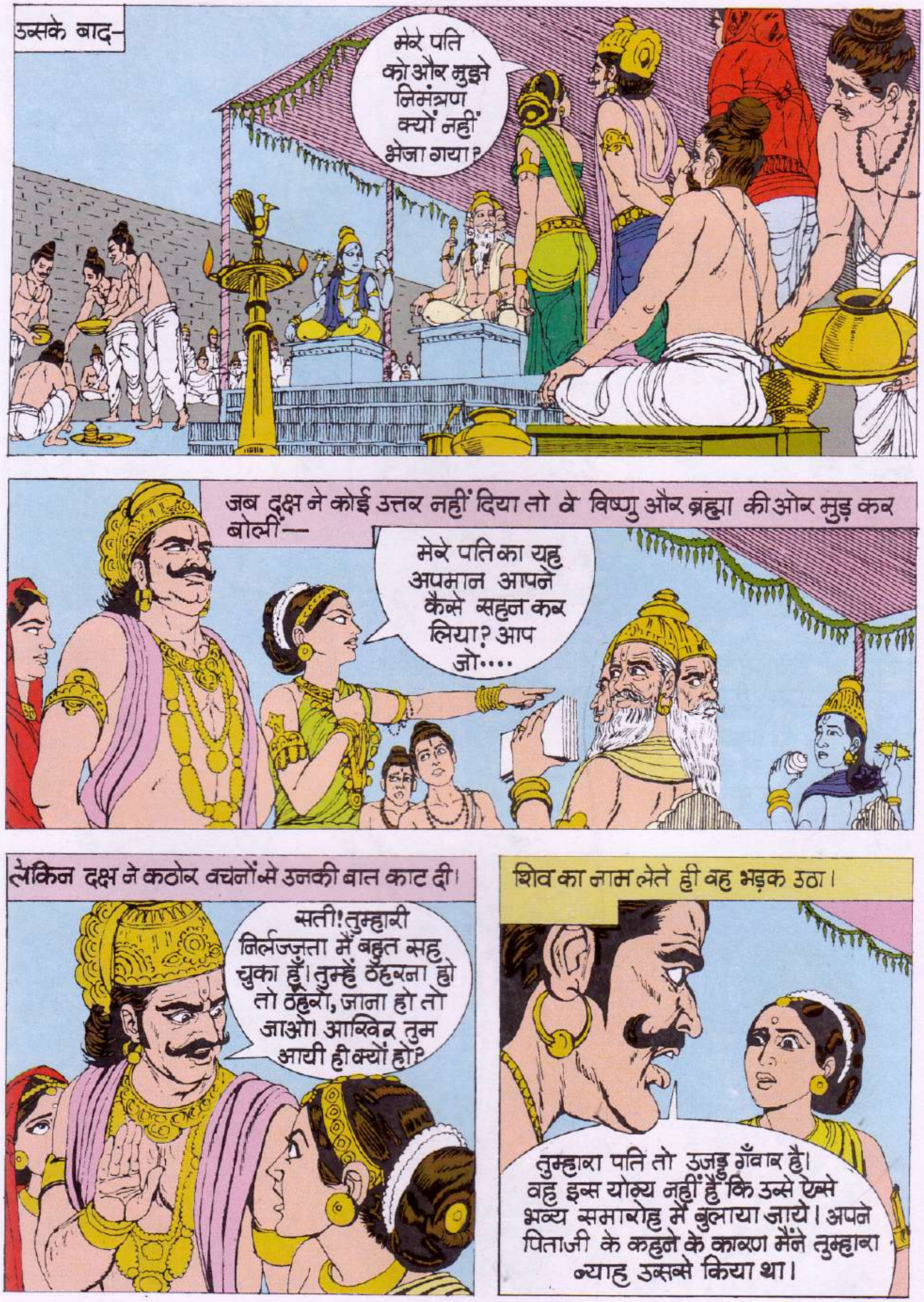
उसके बाद–
मेरे पति को और मुझे निमंत्रण क्यों नहीं भेजा गया?
जब दक्ष ने कोई उत्तर नहीं दिया तो वे विष्णु और ब्रह्मा की ओर मुड़ कर बोलीं—
मेरे पति का यह अपमान आपने कैसे सहन कर लिया? आप जो....
लेकिन दक्ष ने कठोर वचनों से उनकी बात काट दी।
सती! तुम्हारी निर्लज्जता मैं बहुत सह चुका हूँ। तुम्हें ठहरना हो तो ठहरो, जाना हो तो जाओ। आखिर तुम आयी ही क्यों हो?
शिव का नाम लेते ही वह भड़क उठा।
तुम्हारा पति तो उजड्ड गँवार है। वह इस योग्य नहीं है कि उसे ऐसे भव्य समारोह में बुलाया जाये। अपने पिताजी के कहने के कारण मैंने तुम्हारा ब्याह उससे किया था।

जब उसका उबाल ठंडा पड़ा —
ख़ैर, तुम आ ही गयी हो तो जाने दो, उसे भूल जाओ। बैठो और यज्ञ में अपना स्थान लो।
मारे क्रोध और शर्म के, सती पत्थर की मूर्ति जैसी खड़ी रह गयीं।
हाय! मैंने यहाँ आने की ज़िद क्यों की?
फिर वे पिता से बोलीं—
आप कितने घमंडी और धूर्त हैं। आपकी बेटी कहलाने में मुझे लज्जा अनुभव हो रही है।
मैं अपना यह तुच्छ शरीर अग्निमें जला कर भस्म कर दूँगी।

और देखते-देखते वे शिव-ध्यान में लीन हो गयीं।
मेरे स्वामी! अब मैं किसी ऐसे पिता की पुत्री के रूप में जन्म लेकर ही आपकी सेवा में फिर आऊँगी, जिनका मैं आदर कर सकूँ।
और अपनी योगशक्ति से सती जल कर भस्म हो गयीं।
हाय! शिव-प्रिया ने शरीर त्याग दिया!
परम दुख!
हे प्रभु!
निर्दयी दक्ष को इसका परिणाम भुगतना पड़ेगा।
यह सब शोरगुल सुनकर बाहर खड़े शिव के गण भीतर आ गये।
दुष्ट प्रजापति! धिक्कार है!
दुष्ट है किधर?

वे दक्ष की ओर झपटे।
उसकी धज्जियाँ उड़ा दो।
इधर भृगु ने जल्दी से यज्ञ में आहुति डाल दी...
...और हज़ारों शक्तिशाली दानवों का आह्वान किया।

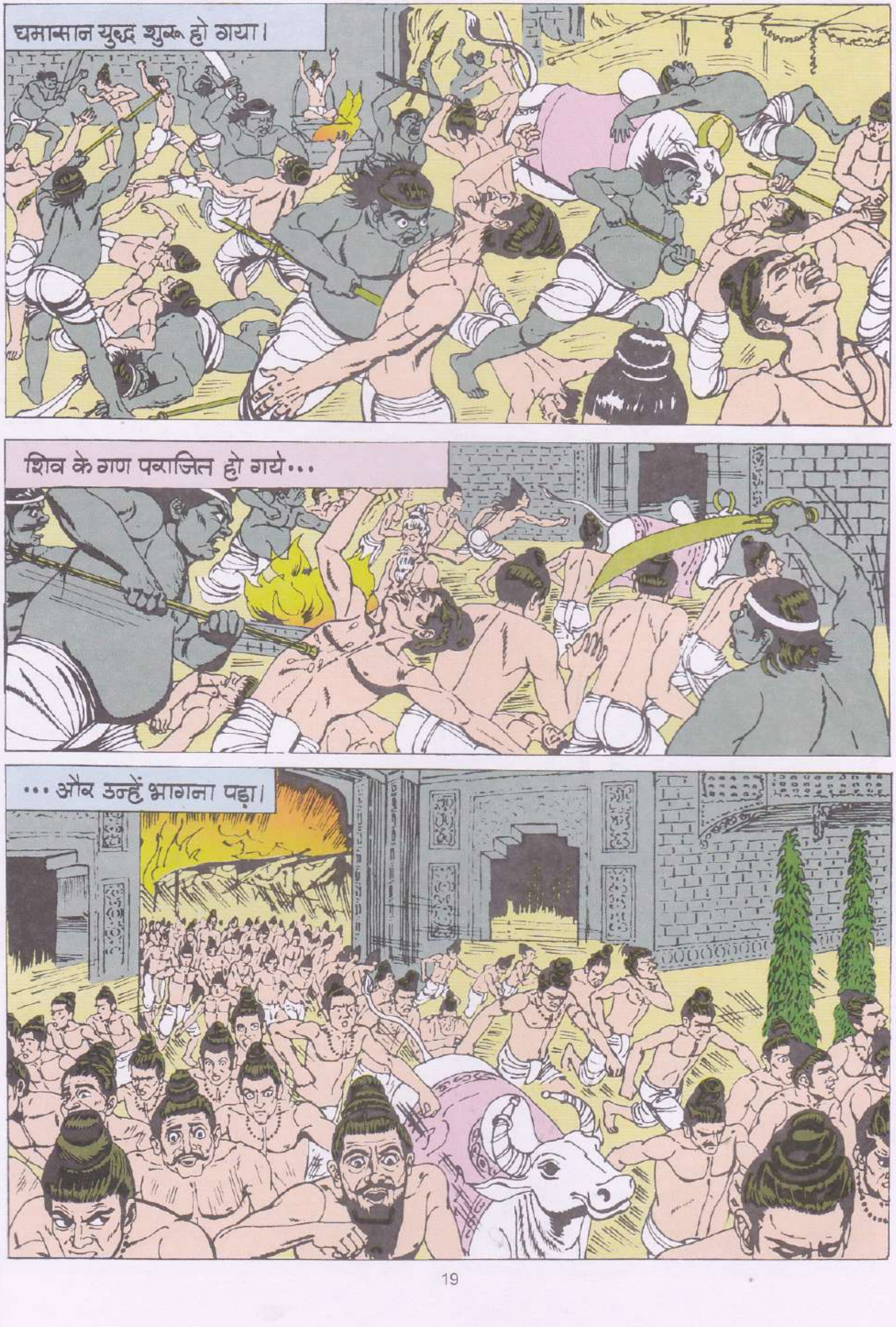
घमासान युद्ध शुरू हो गया।
शिव के गण पराजित हो गये...
... और उन्हें भागना पड़ा।

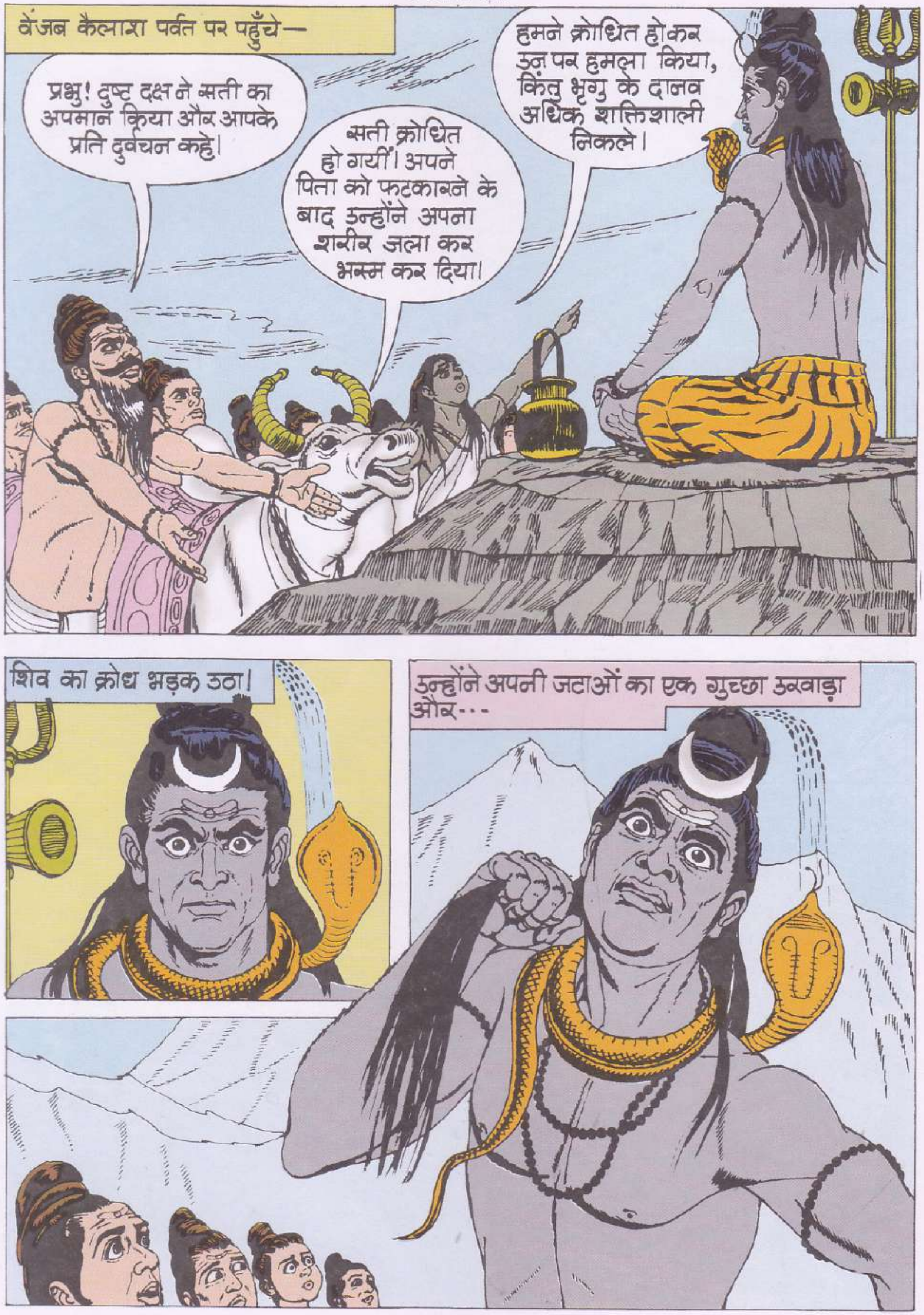
वे जब कैलाश पर्वत पर पहुँचे—
प्रभु! दुष्ट दक्ष ने सती का अपमान किया और आपके प्रति दुर्वचन कहे।
सती क्रोधित हो गयीं। अपने पिता को फटकारने के बाद उन्होंने अपना शरीर जला कर भस्म कर दिया।
हमने क्रोधित होकर उन पर हमला किया, किंतु भृगु के दानव अधिक शक्तिशाली निकले।
शिव का क्रोध भड़क उठा।
उन्होंने अपनी जटाओं का एक गुच्छा उखाड़ा और···

···उसे ज़ोर से ज़मीन पर पटका।
भड़ाम
गुच्छे के दो टुकड़े हो गये।
एक हिस्से से महाशक्तिशाली वीरभद्र प्रकट हुआ ---
···और दूसरे से महाकाली।

स्वामी! आदेश दें। मुझे क्या करना है?
तुम्हारी विजय हो।

घमंडी दक्ष की यज्ञशाला का विध्वंस कर दो। तुम्हें मेरे जितने गण चाहिए ले जाओ उसे मारकर ही लौटना।

महाकाली के नेतृत्व में वीरभद्र दल बल सहित दक्ष के महल की ओर चल दिया।

इधर वीरभद्र आगे बढ़ रहा था उधर दक्ष तथा उसके अतिथियों को बार-बार अशकुन हो रहे थे। उन्होंने दक्ष को शाप देती हुई आकाशवाणी सुनी।

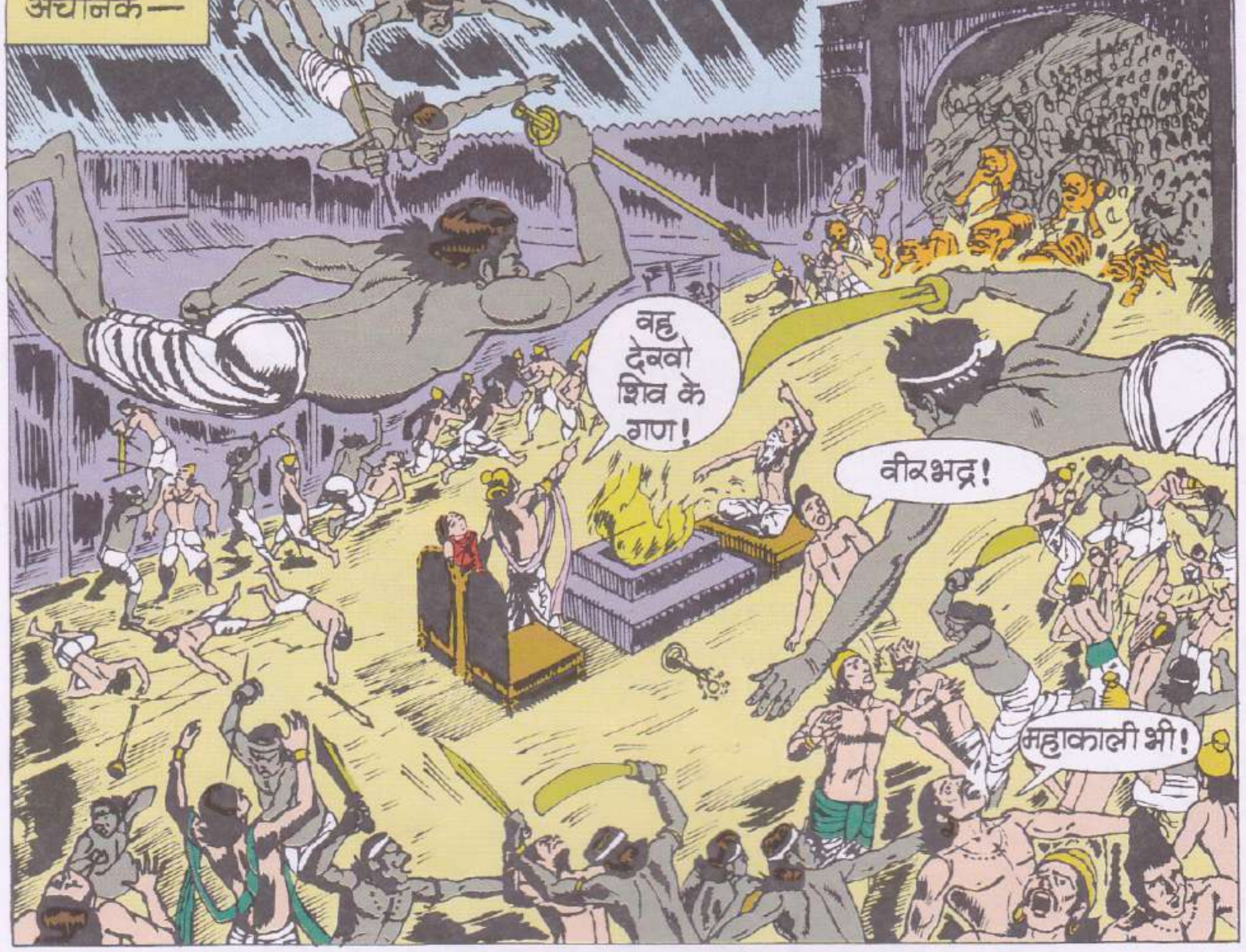
अचानक —
वह देखो शिव के गण!
वीरभद्र!
महाकाली भी!

दक्ष ने देवराज इंद्र से प्रार्थना की।
अब मैं केवल आपही की शक्ति और सहारे पर निर्भर कर सकता हूँ। दया करके मेरे यज्ञ और मेरे जीवन को बचाइए।

इंद्र तुरंत ही ऐरावत हाथी पर सवार होकर देवताओं के साथ चल पड़े।

बड़ी भयंकर लड़ाई हो रही थी।

भृगु ने एक बार फिर अपने दानवों का आह्वान किया। किंतु वे सब हतप्रभ थे।
आओ, आओ, मेरे पास आओ मैं तुम्हारे टुकड़े-टुकड़े कर डालूँगा।

आओ अग्नि! आओ यम! अरे बहादुरो आओ!

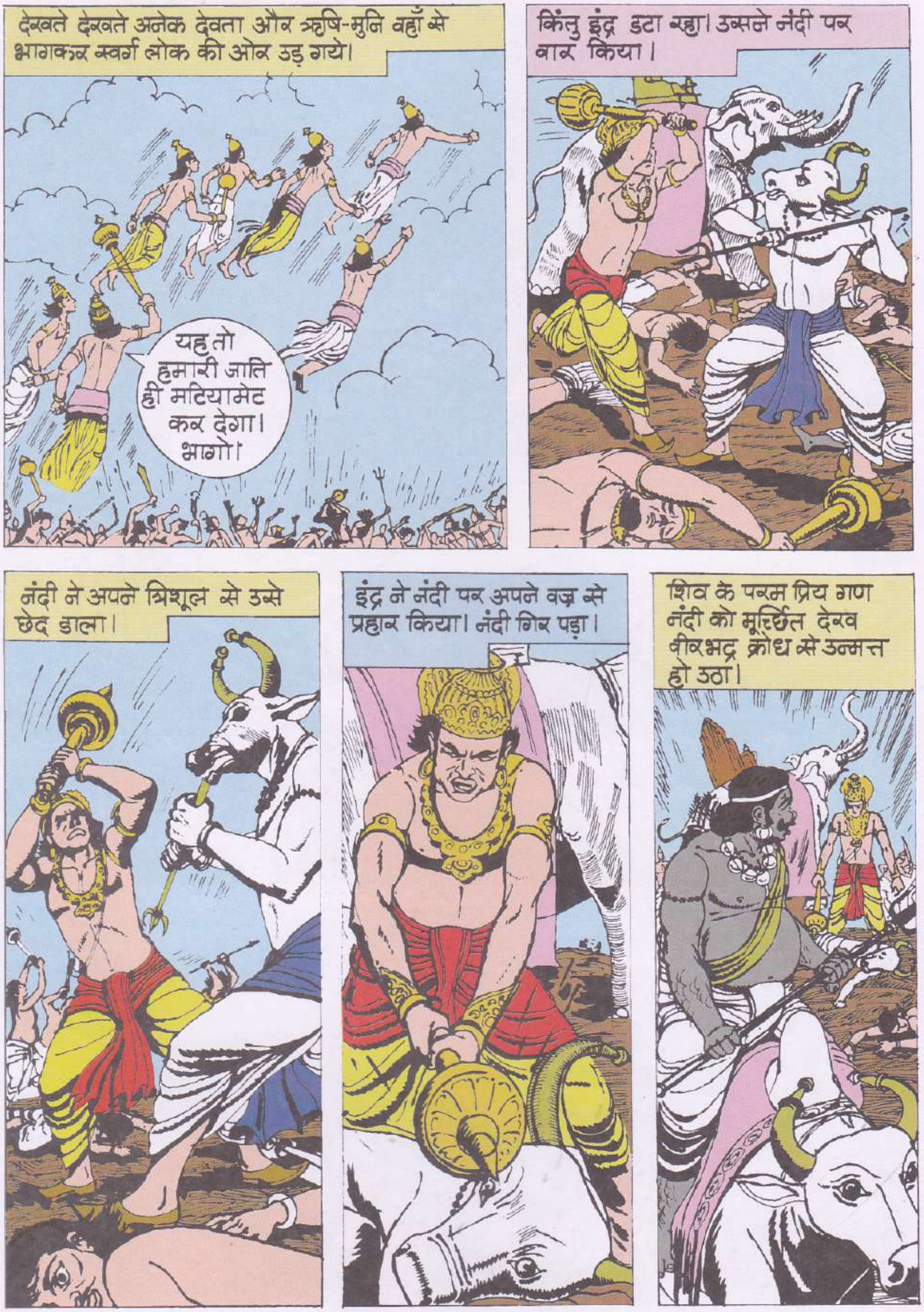
देखते देखते अनेक देवता और ऋषि-मुनि वहाँ से भागकर स्वर्ग लोक की ओर उड़ गये।
यह तो हमारी जाति ही मटियामेट कर देगा। भागो!
किंतु इंद्र डटा रहा। उसने नंदी पर वार किया।
नंदी ने अपने त्रिशूल से उसे छेद डाला।
इंद्र ने नंदी पर अपने वज्र से प्रहार किया। नंदी गिर पड़ा।
शिव के परम प्रिय गण नंदी को मूर्छित देख वीरभद्र क्रोध से उन्मत्त हो उठा।

उसने अपना धनुष उठाया और विषैले तीरों की बौछार शुरू कर दी।

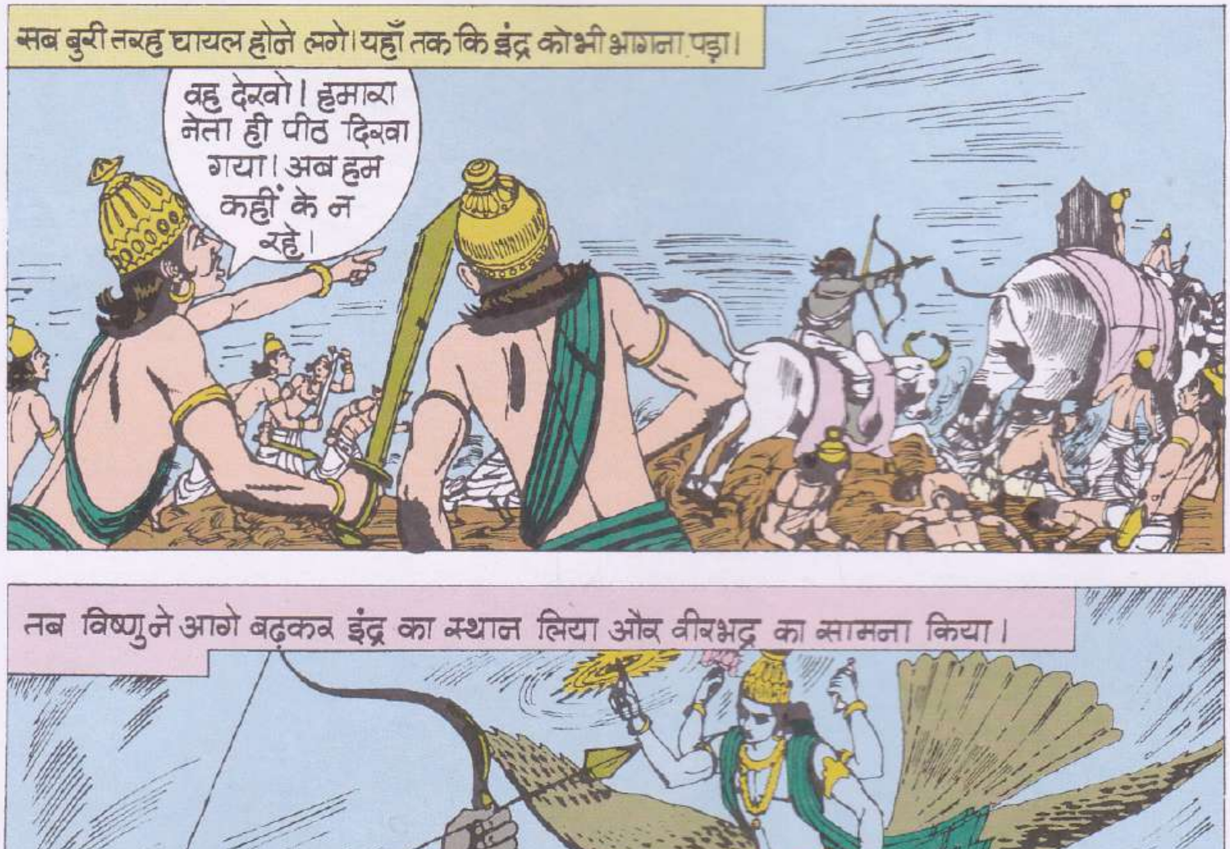
सब बुरी तरह घायल होने लगे। यहाँ तक कि इंद्र को भी भागना पड़ा।
वह देखो! हमारा नेता ही पीठ दिखा गया। अब हम कहीं के न रहे।

तब विष्णु ने आगे बढ़कर इंद्र का स्थान लिया और वीरभद्र का सामना किया।

लेकिन वीरभद्र के त्रिशूल के वार से विष्णु भी मूर्च्छित होकर गिर पड़े।
उन्हें वहीं छोड़कर वीरभद्र दक्ष को खोजता हुआ आगे बढ़ा।
हाँ दुष्ट! तू यहाँ छिपा है!
उसने एक झटके से दक्ष का सिर उड़ा दिया और---
... यज्ञ की अग्नि में फेंक दिया।

अपना कार्य पूरा करके वह कैलाश पर्वत पर लौट आया।

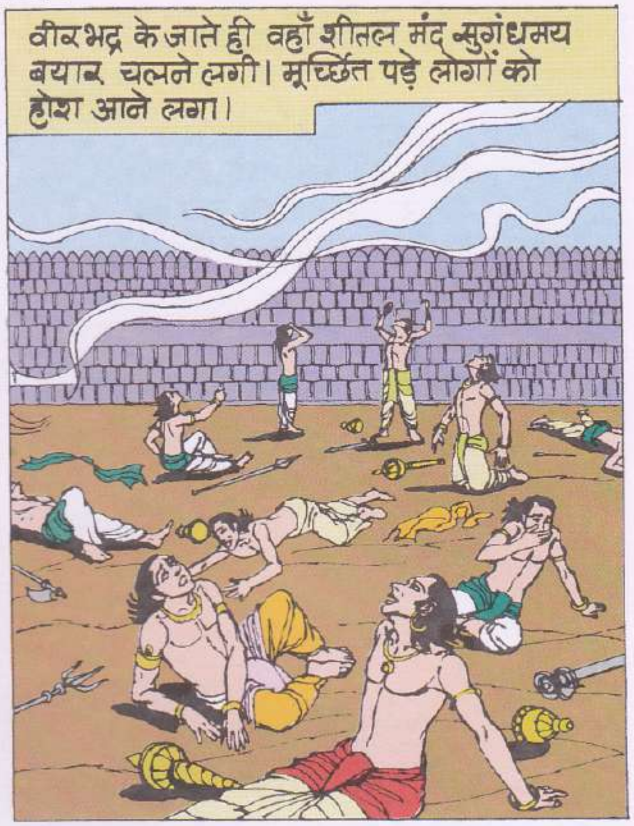
वीरभद्र के जाते ही वहाँ शीतल मंद सुगंधमय बयार चलने लगी। मूर्च्छित पड़े लोगों को होश आने लगा।

ब्रह्मा विष्णु के पास आये।
मेरे पुत्र को जीवन दान देना ही होगा। यज्ञ भी पूरा होना चाहिए। समझ में नहीं आता क्या करें!
चलो हम शिव के पास जाकर उनका क्रोध शांत करें।

जब वे कैलाश पर्वत पर पहुँचे —
महाराज! आप परम दयालु हैं। दया करके दक्ष का अधूरा यज्ञ पूरा हो जाने दें। उसे जीवनदान दें।
दक्ष ईर्ष्या के वशीभूत हो गया था। ईर्ष्या और घृणा मनुष्य का नाश कर देती हैं। ठीक है, दक्ष को पुनर्जीवन तो मिलेगा, लेकिन उसका सिर बकरे का होगा.
तो प्रभु! हमारे साथ यज्ञभूमि पर चलने की कृपा कीजिए।
मैं चलूँगा।

जब वे यज्ञभूमि पर पहुँचे —
मुझे बलि के बकरे का सिर लाकर दो।
सिर लाया गया। शिव ने दक्ष के धड़ पर उसे जोड़ दिया।
दक्ष जैसे गहरी निद्रा से धीरे-धीरे उठा।
जब उसने शिव को देखा तो झुक कर प्रणाम किया।
मैं बहुत ही धूर्त और मूर्ख था। आपने उसकी सजा मुझे दे दी। अब मैं प्रार्थना करता हूँ, कृपा करके मुझे यज्ञ पूरा करने की आज्ञा दें।

शिव ने आज्ञा ही नहीं दी, उसे आशिर्वाद भी दिया। तब दक्ष ने अपना यज्ञ पूरा किया।

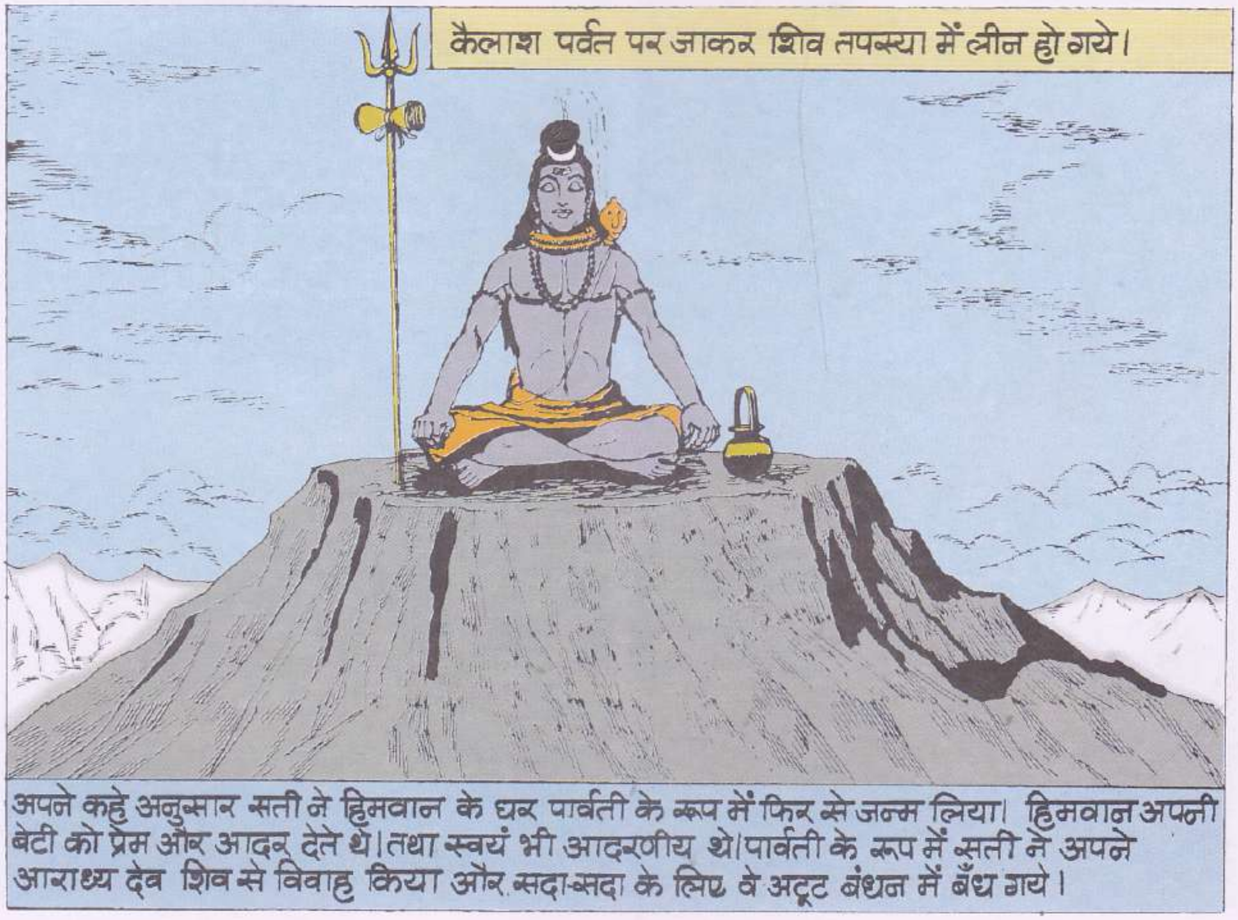
कैलाश पर्वत पर जाकर शिव तपस्या में लीन हो गये।
अपने कहे अनुसार सती ने हिमवान के घर पार्वती के रूप में फिर से जन्म लिया। हिमवान अपनी बेटी को प्रेम और आदर देते थे। तथा स्वयं भी आदरणीय थे। पार्वती के रूप में सती ने अपने आराध्य देव शिव से विवाह किया और सदा-सदा के लिए वे अटूट बंधन में बँध गये।

महाकाव्य और
पौराणिक कथाएं

सती और शिव

शिव के विवाह की कथा केवल एक कहानी नहीं है। हिंदू जीवन के अनुसार सृष्टि के संचालन में प्रकृति और पुरुष इन दो तत्वों की प्रधानता है। और शिव विवाह इसी प्रकृति और पुरुष तत्त्व के सम्पूर्ण विलय की कथा है। शिव (पुरुष) वह ईश्वरीय चेतना है जो केवल शक्ति (प्रकृति) के सहयोग से संसार का सृजन और संहार कर सकती है। इसलिए विष्णु तथा अन्य देवता इस बात के लिए उत्सुक थे कि शिव विवाह कर लें। यजुर्वेद के दो एक स्थलों के अतिरिक्त अन्य कहीं वेदों में शिव शब्द नहीं आता। किंतु शिव के दूसरे नाम रूद्र को अनेक स्थलों पर ईश्वरीय चेतना का प्रतीक बताया गया है। केनोपनिषद में माया के लिए उमा नाम का प्रयोग किया गया है। सती की कथा एक वैदिक धारणा को सहज मानवीय ढंग से अपने पूरे सत्य और सौंदर्य के साथ हमारे समक्ष प्रस्तुत करती है।

अमर चित्र कथा के अन्य महाकाव्य (वीर गाथाएं) और पौराणिक कथाएं :

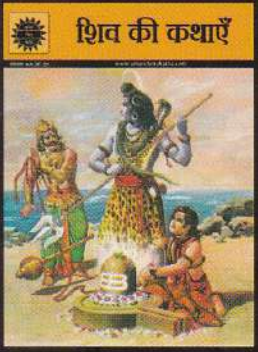

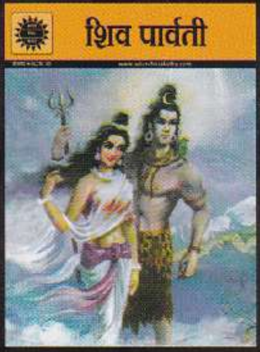

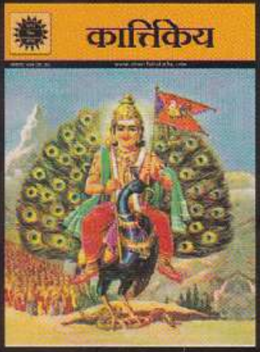

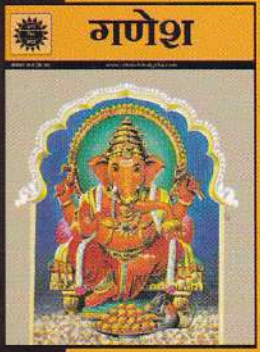

ये भी पढ़ें :

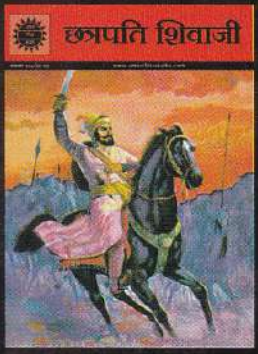

वीरांगना

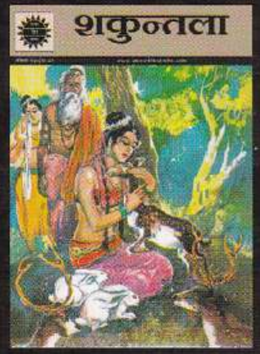

भारतीय उत्कृष्ट साहित्य

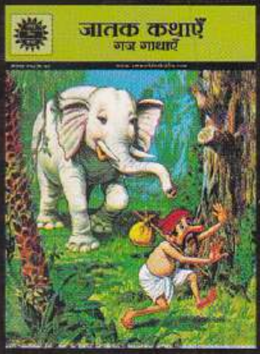

हास-परिहास और दंतकथाएं

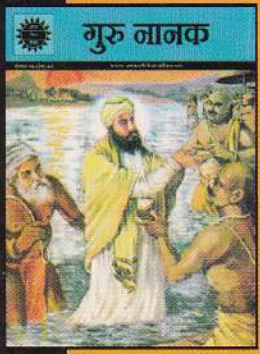

दिव्यदृष्टा

Buy online at www.amarchitrakatha.com

ISBN 978-81-8482-325-7